Lectur series No:26.

Topic,

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A part-I Paper-I (H)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

(1) Bondage,

Ans. ⇒ भारतीय दर्शन में बंधन (Bondage) का अर्थ निरंतर जन्म ग्रहण करना तथा संसार के दुःख को झेलना है। भारतीय दार्शनिक होने के नाते जैन भी बंधन के इस सामान्य विचार को अपनाता है। जैनों के मतानुसार बंधन का अर्थ जीवों को दुःखों का सामना करना तथा जन्म-जन्मान्तर तक भटकना कहा जाता है। दूसरे शब्दों में जीव को दुःखों की अनुभूति होती है तथा उसे जन्म-ग्रहण करना पड़ता है।

यद्यपि जैन दर्शन भारतीय दर्शन में वर्णित बंधन के सामान्य विचारों को मानता है, फिर भी उसके बंधन संबंधी विचारों की विशिष्टता है। इस विशिष्टता

P.T.O.

Scanned with CamScanner

का कारण जैनों का जगत और आत्मा बंधन संबंधी विचारों की विशिष्टता है। विशिष्टता का कारण जैनों का जगत और आत्मा के प्रति व्यक्तिगत विचार कहा जा सकता है।

जैन दार्शनिकों ने जीवों को स्वभावतः अनन्त कहा है। जीव स्वभावतः पूर्ण है और उसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द आदि पूर्णताएँ निहित है। पर बंधन की अवस्था में सारी पूर्णताएँ ढंक लेता है। उसी प्रकार बंधन की अवस्था में आत्मा के सारे स्वभाविक गुण अभिभूत हो जाते है।

जीव (Jiva and Bondage)

(Jiva and Body) जीव शरीर के साथ संयोग का सामना करता है। शरीर के साथ घनिष्ट संबंध स्थापित होना ही बंधन है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

शरीर का निर्माण पुद्गल कणों से होता है। अज्ञात से अभिभूत रहने के कारण

जीव में चार प्रकार की वासनाएँ निवास करने लगती है। क्रोध, मान, लोभ और माया। इन कुप्रवृत्तियों के वंशीभूत होकर जीव शरीर के लिए लालायित रहता है। और पुद्गल कणों को अपनी ओर आकृष्ट करता है, चुम्बक की तरह जो लोहे के कण को अपनी ओर खींचता है।

"कुप्रवृत्तियों को "कषाय" कहते है। जीव किस प्रकार पुद्गल कणों को अपने ओर आकृष्ट करेगा यह जीव के पुनर्जन्म के कर्म के साथ कर्म पर निर्भर रहता है।

इस प्रकार जीवों के शरीर की रचना कर्मों के द्वारा निश्चित होती है।

"जैनों ने अनेक प्रकार के कर्मों को माना है। प्रत्येक कर्म का नामकरण फल के अनुरूप होता है।" etc. END